अध्याय 9 — सहनशीलता की सीमा

सुबह के लगभग नौ बजे थे।

कॉलेज के मुख्य द्वार के पास विद्यार्थियों की भीड़ लगी थी। कोई अपने मित्रों के साथ बातचीत कर रहा था, तो कोई आगामी प्रतियोगिता की तैयारियों को लेकर चिंतित था।

वीर तेज़ी से सूचना-पट्ट की ओर बढ़ा।

प्रतियोगिता में भाग लेने वाले समूहों की अंतिम सूची लगा दी गई थी।

उसने अपनी उँगली से नाम पढ़ने शुरू किए।

“आरव... काव्या... ईशा... वीर...”

वह मुस्कुराया।

“वाह! चारों महारथी एक साथ।”

तभी उसकी दृष्टि दूसरी सूची पर पड़ी।

उसमें युवराज का नाम था।

उसने अपना अलग समूह बना लिया था।

पीछे से ईशा की आवाज आई।

“क्या देख रहे हो?”

“यही कि हमारे युवराज महाराज ने अपनी अलग सेना बना ली है।”

ईशा ने सूची देखी।

“अच्छा ही है। अब कम से कम हर बात पर बहस तो नहीं होगी।”

तभी आरव और काव्या भी वहाँ पहुँच गए।

वीर ने उन्हें पूरी बात बताई।

आरव ने सहजता से कहा—

“उसकी इच्छा है। प्रतियोगिता में कोई भी अपना समूह बना सकता है।”

काव्या ने पूछा—

“तुम्हें बुरा नहीं लगा?”

“क्यों लगेगा? मित्रता का अर्थ यह तो नहीं कि हम हर काम एक साथ ही करें।”

वीर ने मुस्कुराकर कहा—

“तुम्हारे भीतर इतना धैर्य कहाँ से आता है?”

आरव ने उत्तर दिया—

“दादाजी कहते हैं, हर बात को अपने सम्मान का प्रश्न बना लोगे तो जीवन में प्रसन्न रहने का समय ही नहीं बचेगा।”

चारों हँस पड़े।

उन्हें नहीं पता था कि कुछ ही देर बाद इसी धैर्य की परीक्षा होने वाली थी।

1. एक सुनियोजित बाधा

दोपहर में चारों मित्र प्रतियोगिता की तैयारी के लिए तकनीकी प्रयोगशाला पहुँचे।

पिछले कई दिनों से वे आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी शिक्षण व्यवस्था तैयार कर रहे थे, जिसमें महँगे उपकरणों के बिना भी आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराई जा सके।

ईशा ने अपनी फाइल खोली।

“आज हमें इसका प्रदर्शन वाला भाग तैयार करना है। यदि यह पूरा हो गया, तो आधा काम समाप्त समझो।”

वीर ने उत्साह से कहा—

“और उसके बाद हम सब मेरी ओर से चाय पिएँगे।”

काव्या ने पूछा—

“तुम्हारी ओर से?”

“हाँ, लेकिन चाय के पैसे आरव देगा।”

सभी हँसने लगे।

वे प्रयोगशाला के दरवाजे तक पहुँचे तो वहाँ ताला लगा था।

ईशा ने पास खड़े कर्मचारी से पूछा—

“सर, आज हमारे समूह को यहाँ काम करने की अनुमति मिली थी।”

कर्मचारी ने असहज होकर उत्तर दिया—

“बेटा, अनुमति बदल दी गई है।”

“किसने?”

“प्रशासन ने। अब इस कक्ष का उपयोग एक विशेष समूह करेगा।”

वीर ने पूछा—

“लेकिन हमें इसकी सूचना क्यों नहीं दी गई?”

कर्मचारी कुछ कह पाता, उससे पहले भीतर से दरवाजा खुल गया।

युवराज बाहर आया।

उसके पीछे तीन विद्यार्थी और थे।

“अरे, तुम लोग यहाँ?”

वीर ने कहा—

“हाँ, क्योंकि आज यह कक्ष हमारे लिए निर्धारित था।”

युवराज मुस्कुराया।

“था। अब नहीं है।”

आरव ने शांत स्वर में पूछा—

“क्या तुमने इस कक्ष की अनुमति ले ली है?”

“हाँ। मेरे पिताजी ने कॉलेज प्रशासन से बात कर ली। हमारी परियोजना के लिए यह कक्ष अधिक उपयोगी रहेगा।”

काव्या ने कहा—

“लेकिन प्रतियोगिता सभी विद्यार्थियों के लिए है। सुविधाएँ भी समान मिलनी चाहिए।”

युवराज ने उसकी ओर देखकर उत्तर दिया—

“समान अवसर और समान क्षमता दो अलग बातें हैं, काव्या।”

वीर आगे बढ़ा।

“क्षमता का निर्णय तो प्रतियोगिता में होगा।”

युवराज के साथ खड़ा एक विद्यार्थी हँस पड़ा।

“प्रतियोगिता में? तुम लोग पहले अपनी परियोजना तो पूरी कर लो।”

वीर कुछ कहने वाला था, लेकिन आरव ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

“चलो। हम दूसरे स्थान पर काम कर लेंगे।”

युवराज ने तुरंत कहा—

“आरव, यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें कुछ समय के लिए उपकरण उपलब्ध करवा सकता हूँ।”

आरव रुका।

“धन्यवाद। लेकिन अभी हम कोई दूसरा उपाय खोज लेंगे।”

युवराज के चेहरे की मुस्कान हल्की पड़ गई।

“तुम्हें हर बार मेरी सहायता अस्वीकार करने की आवश्यकता क्यों महसूस होती है?”

आरव ने उसकी ओर देखा।

“सहायता और उपकार जताने में अंतर होता है, युवराज। सहायता की आवश्यकता होगी तो अवश्य माँगूँगा।”

वह अपने मित्रों के साथ वहाँ से चला गया।

युवराज कुछ क्षण दरवाजे पर खड़ा रहा।

वह चाहता था कि आरव उसकी ओर देखे, अपनी असमर्थता स्वीकार करे और उससे सहायता माँगे।

लेकिन एक बार फिर ऐसा नहीं हुआ।

2. हार मानने का विकल्प

चारों मित्र पुस्तकालय के पीछे बने छोटे से अध्ययन कक्ष में बैठ गए।

वहाँ न पर्याप्त उपकरण थे, न बड़ी स्क्रीन।

ईशा ने निराश होकर कहा—

“हमने आज का पूरा कार्यक्रम उसी प्रयोगशाला के अनुसार बनाया था।”

वीर ने अपनी फाइल बंद कर दी।

“मुझे युवराज से अधिक क्रोध कॉलेज प्रशासन पर आ रहा है। नियम सभी के लिए समान क्यों नहीं हैं?”

काव्या ने आरव से पूछा—

“अब क्या करेंगे?”

आरव कुछ देर अपनी फाइल देखता रहा।

फिर बोला—

“हमारी योजना का उद्देश्य क्या है?”

ईशा ने उत्तर दिया—

“उन विद्यार्थियों तक आधुनिक शिक्षा पहुँचाना, जिनके पास महँगे साधन नहीं हैं।”

“तो हम स्वयं महँगे साधनों के बिना अपनी योजना प्रस्तुत क्यों नहीं कर सकते?”

तीनों उसकी ओर देखने लगे।

आरव ने कागज पर एक चित्र बनाना शुरू किया।

“हम ऐसा प्रारूप तैयार करेंगे, जो साधारण उपकरणों पर भी काम कर सके। यदि हमें इसे बनाने के लिए सबसे महँगी प्रयोगशाला चाहिए, तो हमारी योजना अपने उद्देश्य में ही असफल हो जाएगी।”

काव्या की आँखों में उत्साह लौट आया।

“अर्थात हमारी समस्या ही हमारे समाधान की पहली परीक्षा बन सकती है!”

“बिल्कुल।”

वीर ने मुस्कुराकर कहा—

“तुम्हारी सबसे बड़ी समस्या पता है क्या है?”

“क्या?”

“तुम निराश होने का अवसर ही नहीं देते।”

ईशा हँस पड़ी।

इसके बाद चारों ने अपना काम बाँट लिया।

ईशा आवश्यक जानकारी एकत्र करेगी। वीर साधारण उपकरणों पर प्रयोग करेगा। काव्या प्रस्तुति तैयार करेगी और आरव सभी भागों को एक साथ जोड़ने की योजना बनाएगा।

शाम तक उन्होंने अपेक्षा से अधिक काम पूरा कर लिया।

लेकिन दूसरी ओर युवराज को यह जानकारी मिल चुकी थी कि उसकी बाधा भी उन्हें रोक नहीं पाई।

3. अपमान की शुरुआत

अगले दिन कॉलेज की कैंटीन में वीर और ईशा एक मेज पर बैठे थे।

आरव और काव्या अभी कक्षा में थे।

वीर अपने मोबाइल पर परियोजना का प्रारूप देख रहा था।

ईशा ने उसके सामने चाय रखी।

"लो, आज मैंने पैसे दिए हैं। अब यह मत कहना कि मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं करती।"

वीर ने हँसते हुए कहा—

"इतना बड़ा उपकार! इसे इतिहास की पुस्तकों में लिखवाना पड़ेगा।"

तभी युवराज अपने नए मित्रों के साथ वहाँ आया।

उनमें से एक विद्यार्थी, समर, वीर की मेज के पास रुक गया।

उसने वीर के मोबाइल की स्क्रीन देखी।

"यही है तुम्हारी प्रतियोगिता वाली योजना?"

वीर ने कहा—

"हाँ। अभी काम चल रहा है।"

समर ने हँसकर कहा—

"यह तो किसी विद्यालय के बच्चे की परियोजना लग रही है।"

वीर ने सहजता से उत्तर दिया—

"हो सकता है। लेकिन अभी पूरी नहीं हुई है।"

समर ने मोबाइल उठाने का प्रयास किया।

वीर ने तुरंत उसका हाथ रोक दिया।

"देखना है तो पूछकर देखो।"

समर का चेहरा बदल गया।

“इतनी अकड़?”

ईशा ने कहा—

“उसने केवल अपनी वस्तु बिना पूछे न उठाने के लिए कहा है।”

समर ने उसकी ओर देखा।

“मैं तुमसे बात नहीं कर रहा।”

वीर अब गंभीर हो गया।

“ईशा से ठीक से बात करो।”

युवराज कुछ दूरी पर खड़ा सब देख रहा था।

उसने समर को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

समर ने व्यंग्य किया—

“तुम दोनों को देखकर लगता है जैसे संसार की सबसे बड़ी समस्या यही है कि तुम्हारी परियोजना पूरी हो जाए।”

ईशा ने अपना बैग उठाया।

“वीर, चलो यहाँ से।”

लेकिन समर ने रास्ते में खड़े होकर कहा—

“अरे, इतनी जल्दी क्यों? पहले अपने महान मित्र आरव को बुला लो। वही तो सबको उपदेश देता फिरता है।”

वीर ने उसका हाथ हटाया।

“रास्ते से हटो।”

समर पीछे हट गया, लेकिन उसके चेहरे पर क्रोध आ गया।

उसने अपने हाथ में पहने शक्ति-नियंत्रक उपकरण को छुआ।

उसकी हथेली के आसपास हल्की विद्युत चमकने लगी।

कैंटीन में बैठे कुछ विद्यार्थी अपनी कुर्सियों से उठ गए।

ईशा ने वीर का हाथ पकड़ लिया।

“वीर, चलो।”

वीर ने समर की ओर देखते हुए कहा—

“तुम्हारे पास शक्ति है, इसका अर्थ यह नहीं कि तुम किसी को भयभीत कर सकते हो।”

समर ने मुस्कुराकर पूछा—

“और यदि करूँ तो?”

वीर ने उत्तर नहीं दिया।

उसने ईशा को साथ लिया और दूसरी ओर बढ़ने लगा।

समर ने जानबूझकर अपना हाथ आगे किया।

एक छोटी विद्युत तरंग मेज से टकराई।

मेज पर रखा चाय का गिलास गिरकर टूट गया।

आवाज सुनकर कैंटीन में शांति छा गई।

समर हँसने लगा।

“अरे! हाथ फिसल गया।”

वीर ने उसकी ओर देखा।

उसके चेहरे पर क्रोध था, लेकिन उसने स्वयं को रोक लिया।

वह ईशा को लेकर वहाँ से चला गया।

युवराज ने जाते हुए दोनों को देखा।

उसकी योजना का पहला भाग सफल होता दिखाई दे रहा था।

4. एक कठिन प्रश्न

कुछ देर बाद आरव और काव्या को पूरी घटना का पता चला।

वे तुरंत वीर और ईशा के पास पहुँचे।

ईशा शांत थी, लेकिन उसके चेहरे पर परेशानी स्पष्ट थी।

काव्या ने उसका हाथ पकड़ लिया।

“तुम ठीक हो?”

“हाँ। मुझे कुछ नहीं हुआ।”

आरव ने वीर से पूछा—

“तुमने कुछ कहा?”

वीर ने उत्तर दिया—

“बहुत कुछ कहना चाहता था। लेकिन ईशा वहाँ थी। मैं बात बढ़ाना नहीं चाहता था।”

आरव उसके पास बैठ गया।

“तुमने सही किया।”

वीर ने आश्चर्य से पूछा—

“सही किया? उसने हमारे सामने शक्ति का प्रदर्शन करके हमें डराने का प्रयास किया!”

“और तुमने उसे सफल नहीं होने दिया।”

वीर कुछ क्षण चुप रहा।

फिर बोला—

“आरव, कब तक?”

“क्या?”

“कब तक हम हर बार शांत रहेंगे? पहले युवराज ने हमारा अपमान किया। फिर प्रयोगशाला छीन ली। अब उसके मित्र हमें धमका रहे हैं।”

आरव ने गंभीरता से उसकी बात सुनी।

वीर आगे बोला—

“मैं लड़ना नहीं चाहता। लेकिन यदि कोई बार-बार हमारे सामने आकर हमें कमजोर समझे, तो क्या हमें हमेशा रास्ता बदल लेना चाहिए?”

आरव के पास तुरंत उत्तर नहीं था।

काव्या ने कहा—

“वीर गलत नहीं कह रहा। हर परिस्थिति में मौन रहना समाधान नहीं होता।”

आरव ने सिर हिलाया।

“मैं भी यही सोच रहा हूँ।”

ईशा ने पूछा—

“तो अब क्या करेंगे?”

आरव ने कहा—

“पहले कॉलेज प्रशासन को पूरी घटना बताएँगे। यदि कोई हमारी सुरक्षा को खतरे में डाल रहा है, तो उसका विरोध करना आवश्यक है।”

वीर ने धीमे स्वर में पूछा—

“और यदि प्रशासन ने कुछ नहीं किया?”

आरव ने उसकी ओर देखा।

“तब हमें दूसरा रास्ता खोजना होगा।”

“कौन सा रास्ता?”

आरव कुछ क्षण शांत रहा।

“अभी नहीं जानता। लेकिन इतना अवश्य जानता हूँ कि किसी को हमें अपमानित करने का अधिकार नहीं है।”

वीर ने पहली बार आरव की आवाज में सामान्य से अधिक कठोरता अनुभव की।

5. न्याय की कीमत

अगली सुबह चारों मित्र कॉलेज के अनुशासन अधिकारी के कक्ष में पहुँचे।

उन्होंने कैंटीन की घटना का पूरा विवरण दिया।

अधिकारी ने ध्यानपूर्वक उनकी बात सुनी।

फिर पूछा—

“क्या किसी को शारीरिक चोट पहुँची?”

ईशा ने उत्तर दिया—

“नहीं, लेकिन विद्युत शक्ति का प्रयोग किया गया था।”

“क्या उस शक्ति से किसी को सीधा नुकसान हुआ?”

वीर ने कहा—

“सर, यदि नुकसान हो जाता, तब शिकायत करने का क्या लाभ रहता?”

अधिकारी ने अपनी कुर्सी पर पीछे झुकते हुए कहा—

“देखिए, कॉलेज में विद्यार्थियों के बीच छोटी-मोटी बहस होती रहती है। हमें प्रत्येक घटना को बड़ा विवाद नहीं बनाना चाहिए।”

आरव ने विनम्र स्वर में पूछा—

“क्या किसी विद्यार्थी को डराने के लिए शक्ति का उपयोग करना छोटी घटना है?”

अधिकारी ने उसकी ओर देखा।

“तुम्हारा नाम?”

“आरव।”

“आरव, तुम समझदार विद्यार्थी लगते हो। अपने भविष्य पर ध्यान दो। अनावश्यक विवादों से दूर रहो।”

आरव ने पूछा—

“तो क्या हमारी शिकायत दर्ज की जाएगी?”

अधिकारी कुछ क्षण चुप रहा।

“मैं संबंधित विद्यार्थियों से बातचीत कर लूँगा।”

“क्या हमें लिखित शिकायत जमा करनी चाहिए?”

अधिकारी का स्वर बदल गया।

“मैंने कहा न, मैं देख लूँगा।”

आरव समझ गया कि इस समय उन्हें कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिलने वाला।

चारों वहाँ से बाहर आ गए।

वीर ने कहा—

“देख लिया? यही होगा।”

ईशा ने निराश होकर कहा—

“शायद युवराज के परिवार का प्रभाव यहाँ भी है।”

आरव ने उत्तर दिया—

“हो सकता है। लेकिन हम अपनी ओर से सही प्रक्रिया पूरी करेंगे।”

काव्या ने पूछा—

“क्या तुम लिखित शिकायत दोगे?”

“हाँ। और उसकी एक प्रति अपने पास रखेंगे।”

वीर ने उसकी ओर देखा।

“अब लग रहा है कि तुम वास्तव में गंभीर हो।”

आरव ने कहा—

“वीर, किसी का अपमान सह लेना कभी-कभी समझदारी हो सकती है। लेकिन किसी को लगातार दूसरों को अपमानित करने की छूट देना समझदारी नहीं है।”

6. युवराज की अधूरी जीत

शाम को युवराज अपने घर के निजी अध्ययन कक्ष में बैठा था।

समर उसके सामने खड़ा था।

“तुमने कहा था कि थोड़ा दबाव बनाना है। मैंने बना दिया।”

युवराज ने पूछा—

“आरव ने क्या किया?”

“कुछ नहीं। वे लोग शिकायत करने गए थे।”

“फिर?”

“प्रशासन ने बात टाल दी।”

युवराज मुस्कुराया।

“अच्छा।”

समर ने पूछा—

“अब आगे क्या?”

युवराज ने कुछ क्षण विचार किया।

“अभी कुछ नहीं। उन्हें प्रतियोगिता की तैयारी करने दो।”

“लेकिन तुम तो उन्हें हराना चाहते हो।”

“प्रतियोगिता में हराना और जीवन में हराना, दोनों अलग बातें हैं।”

समर उसके चेहरे को देखने लगा।

युवराज ने आगे कहा—

“आरव को अपनी समझदारी पर बहुत गर्व है। उसे लगता है कि प्रत्येक समस्या का समाधान शांत रहकर निकाला जा सकता है।”

“तो?”

“मैं देखना चाहता हूँ कि जब उसके अपने मित्र किसी वास्तविक संकट में होंगे, तब भी क्या वह इतना ही शांत रह पाएगा।”

समर ने हँसते हुए कहा—

“तुम चाहो तो मैं कल ही—”

“नहीं।”

युवराज ने उसे बीच में रोक दिया।

“अभी किसी को गंभीर नुकसान नहीं पहुँचाना है। मैं केवल यह देखना चाहता हूँ कि आरव की सीमा कहाँ तक है।”

समर चला गया।

युवराज अपनी कुर्सी पर बैठा कुछ सोचता रहा।

उसके सामने काव्या का चित्र था।

वह चित्र कॉलेज के एक समारोह में लिया गया था।

काव्या मुस्कुरा रही थी।

उसके पास आरव खड़ा था।

युवराज ने चित्र को ध्यान से देखा।

फिर धीमे स्वर में कहा—

“तुम्हारे सामने उसे इतना कमजोर कर दूँगा कि तुम स्वयं सोचोगी, तुमने उसमें ऐसा क्या देखा था।”

लेकिन वह एक बात भूल रहा था।

किसी व्यक्ति को नीचा दिखाने का प्रयास करते-करते मनुष्य स्वयं कितना नीचे गिर सकता है, इसका उसे अभी अनुभव नहीं था।

7. एक छोटी-सी बात

रात में आरव घर लौटा तो दादाजी भोजन की मेज पर बैठे थे।

उन्होंने आरव को देखते ही पूछा—

"आज बहुत थके हुए लग रहे हो।"

आरव ने बैग नीचे रखा।

"कॉलेज में कुछ परेशानी थी।"

"किस प्रकार की?"

आरव ने पहले बात टालने का विचार किया।

फिर दादाजी के सामने बैठ गया।

उसने प्रयोगशाला की घटना से लेकर कैंटीन और शिकायत तक सब बता दिया।

दादाजी बिना बीच में टोके सुनते रहे।

आरव ने अंत में पूछा—

"दादाजी, क्या हर बार शांत रहना उचित है?"

दादाजी ने कुछ क्षण उसकी ओर देखा।

"नहीं, बेटा।"

आरव को आश्चर्य हुआ।

"आप तो हमेशा धैर्य रखने की बात करते हैं।"

"धैर्य और भय में अंतर होता है।"

"कैसे?"

“जब तुम किसी परिस्थिति को समझकर सही समय की प्रतीक्षा करते हो, वह धैर्य है। लेकिन जब तुम केवल परिणाम के भय से अनुचित बात स्वीकार कर लेते हो, वह धैर्य नहीं है।”

आरव ध्यानपूर्वक सुन रहा था।

दादाजी ने आगे कहा—

“शक्ति का अर्थ केवल किसी को पराजित कर देना नहीं है। कभी-कभी शक्ति का अर्थ स्वयं पर नियंत्रण रखना भी होता है।”

आरव ने पूछा—

“और यदि कोई हमारे नियंत्रण को हमारी कमजोरी समझ ले?”

दादाजी कुछ देर मौन रहे।

फिर बोले—

“तब उसे यह समझाना आवश्यक हो जाता है कि तुम्हारा मौन तुम्हारी विवशता नहीं, तुम्हारा निर्णय था।”

आरव ने उनकी ओर देखा।

“लेकिन यह कैसे समझाएँ?”

दादाजी ने उत्तर दिया—

“ऐसे कि तुम्हारा निर्णय तुम्हारे मूल्यों को भी सुरक्षित रखे और जिनकी रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है, उन्हें भी।”

आरव कुछ देर सोचता रहा।

फिर उसने धीरे से कहा—

“मुझे लगता है, आने वाले दिनों में यह बात मेरे बहुत काम आएगी।”

दादाजी के चेहरे पर एक क्षण के लिए चिंता उभर आई।

उन्होंने आरव के सिर पर हाथ रखा।

“मुझे भी ऐसा ही लगता है, बेटा।”

8. सीमा के उस पार

अगले दिन कॉलेज में प्रतियोगिता की प्रारंभिक जाँच होनी थी।

चारों मित्र सुबह जल्दी पहुँचे।

उन्होंने अपनी योजना की प्रस्तुति तैयार कर ली थी।

वीर ने उत्साह से कहा—

“आज यदि सब ठीक रहा तो अगले चरण में पहुँच जाएँगे।”

ईशा ने मुस्कुराकर उत्तर दिया—

“और यदि नहीं पहुँचे?”

“तो आरव कोई नया उपाय खोज लेगा।”

आरव हँस पड़ा।

काव्या ने कहा—

“इस बार हम सबने मिलकर मेहनत की है। परिणाम जो भी हो, हमें प्रसन्न होना चाहिए।”

तभी युवराज वहाँ आया।

उसके साथ समर और दो अन्य विद्यार्थी थे।

युवराज ने उनकी प्रस्तुति की फाइल देखी।

“तो आखिर तुम लोगों ने परियोजना पूरी कर ही ली।”

आरव ने कहा—

“हाँ। अभी कुछ सुधार बाकी हैं।”

युवराज ने मुस्कुराकर पूछा—

“मेरी सहायता के बिना?”

“हम चारों ने मिलकर काम किया है।”

समर ने व्यंग्य किया—

“देखते हैं, यह महान मित्रता प्रतियोगिता में कितने अंक दिलाती है।”

वीर ने उसकी ओर देखा, लेकिन कुछ नहीं कहा।

युवराज ने ईशा की ओर देखते हुए कहा—

“वैसे उस दिन कैंटीन में जो हुआ, उसे इतना गंभीरता से लेने की आवश्यकता नहीं थी।”

ईशा ने उत्तर दिया—

“तुम्हारे लिए वह छोटी बात होगी। मेरे लिए नहीं थी।”

युवराज ने हँसते हुए कहा—

“तुम लोग तो हर बात को अपने सम्मान से जोड़ लेते हो।”

आरव ने गंभीर स्वर में कहा—

“सम्मान सभी के लिए महत्वपूर्ण होता है, युवराज।”

युवराज उसकी ओर मुड़ा।

“और यदि कोई तुम्हारा सम्मान न करे तो?”

“तो मैं पहले उसे समझाने का प्रयास करूँगा।”

“और यदि वह न समझे?”

“तब भी मैं अनावश्यक विवाद नहीं चाहूँगा।”

युवराज एक कदम आगे आया।

“और यदि वह तुम्हारे मित्रों को परेशान करे?”

आरव ने उसकी आँखों में देखा।

“तब मैं उन्हें अकेला नहीं छोड़ूँगा।”

कुछ क्षण के लिए दोनों के बीच मौन छा गया।

युवराज मुस्कुराया।

“अच्छा। यह बात याद रखूँगा।”

वह अपने साथियों के साथ आगे बढ़ गया।

काव्या ने आरव का हाथ पकड़ लिया।

“मुझे उसका व्यवहार अच्छा नहीं लग रहा।”

आरव ने कहा—

“मुझे भी नहीं।”

वीर ने पूछा—

“क्या लगता है, वह आगे क्या करेगा?”

आरव ने उत्तर दिया—

“नहीं जानता।”

कुछ देर बाद उसने आगे कहा—

“लेकिन अब हमें सावधान रहना होगा।”

दूर जाते हुए युवराज ने पीछे मुड़कर उन्हें देखा।

उसके चेहरे पर मुस्कान थी।

वह समझ चुका था कि आरव अपने मित्रों के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता है।

अब उसके मन में प्रश्न यह नहीं था कि आरव को कैसे अपमानित किया जाए।

प्रश्न यह था कि उसे ऐसी परिस्थिति में कैसे पहुँचाया जाए, जहाँ उसे अपने मित्रों की रक्षा और अपनी सहनशीलता में से किसी एक को चुनना पड़े।

और इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए युवराज ने जो मार्ग चुना था, वह केवल एक कॉलेज विवाद तक सीमित नहीं रहने वाला था।

अध्याय 9 समाप्त।